SP
A Multidisciplinary Quarterly International Refereed Research Journal

UGC Approved Journal No - 47168
ISSN 2231 – 413X

SHODH PRERAK

A Multidisciplinary Quarterly International Refereed Research Journal

http://shodhprerak.blogspot.com

Vol. - VII, Issue-3, July 2017

Chief Editor :
Dr. Shashi Bhushan Poddar

Editors :
Geeta Yadav
Pradeep Kumar

UGC Approved Journal No – 47168
(IIJIF) Impact Factor - 3.234

ISSN 2231 – 413X

SHODH PRERAK

A Multidisciplinary Quarterly International Refereed Research Journal

Chief Editor:
Dr. Shashi Bhushan Poddar

Editors:
Dr. Reeta Yadav
Dr. Pradeep Kumar

Volume VII **Issue 3** **July** **2017**

Published By:
VEER BAHADUR SEVA SANSTHA
LUCKNOW

Printed at:
F/70 South City, Rai Bareilly Road, Lucknow-226025
E-mail: shodhprerak@gmail.com, shodhprerakbbau@gmail.com
Cell NO.: 09415390515, 09450245771, 08960501747

Cite this Volume as S/P, Vol. VII, Issue 3, July 2017

- महाभाष्यकारस्य लौकिकोदाहरणप्रस्तुतिकला — 331-335
  प्रतिभा आर्या, शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- गाँधी के अनुसार सत्य की व्याख्या — 336-338
  नित्यानंद उपाध्याय, शोध छात्र, दर्शन एवं धर्म विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- शारीरिक भाष्य में परिणामवाद की समीक्षा — 339-346
  डॉ आशुतोष त्रिपाठी, जनरल फेलो, (आई.सी.पी.आर., नई दिल्ली) दर्शन एवं धर्म विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- अलंकारों का वर्गीकरण (तुलनात्मक अध्ययन) — 347-349
  डॉ. अर्पिता चन्द्रा, 211सी/4ए रसूलाबाद, इलाहाबाद-211004
- भारत में नक्सलवाद का इतिहास — 350-351
  डॉ. प्रेमचन्द्र यादव, एसोसिएट प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष-राजनीति विज्ञान विभाग, बी.एन.के.बी. पी. जी. कॉलेज, अकबरपुर, अम्बेडकर नगर।
- उदारवादी नारीवादी चिंतन परम्परा का अध्ययन (जॉन स्टुअर्ट मिल के संदर्भ में) — 352-355
  संजय शर्मा, शोधार्थी राजनीति विज्ञान, पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ.प्र.)
- बौद्धधर्म में ध्यान का स्वरूप — 356-360
  डॉ. नीलम यादव, प्रवक्ता, संस्कृत, पं. जवाहर लाल नेहरू इं. कालेज, बांसगांव गोरखपुर
- संगीत के प्रचार-प्रसार में मीडिया की भूमिका — 361-363
  विनीत आशीष पाण्डेय, (यू.जी.सी. नेट, एम.फिल.), शोध छात्र, गायन विभाग, संगीत एवं मंच कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वराणसी
- जानकीजीवनम् में रस-परिपाक — 364-369
  राजेश कुमार, शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
- आर्ष संस्कारों की समाजोन्नयन में उपयोगिता — 370-373
  पंकज कुमार शर्मा, शोधच्छात्र, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, गंगानाथ झा परिसर, इलाहाबाद
- कापिशायन्यां धर्माडम्बरेषु आक्षेपः — 374-375
  शीतला प्रसाद तिवारी, शोधच्छात्रः, राष्ट्रियससंस्कृतसंस्थानम्, गङ्गानाथझापरिसरः चन्द्रशेखर-आजादोद्यानम्, इलाहाबादनगरम् उत्तरप्रदेशः
- भगत सिंह ने अदालत को बनाया देशभक्ति का प्रचार मंच — 376-377
  डॉ. अंजनी कुमार गुप्ता, प्रवक्ता राजनीतिशास्त्र विभाग, चौधरी गोविन्द सिंह महाविद्यालय, सोनभद्र
- धर्मनिरपेक्षता : एक अध्ययन — 378-380
  डॉ. उदयभान, गेस्ट फैकल्टी, राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- भारतीय सन्दर्भ में पं. जवाहर लाल नेहरू का इतिहास लेखन — 381-384
  हरि प्रताप सिंह, शोध छात्र, डी.ए.वी. पी.जी. कालेज, (बी.एच.यू.), वाराणसी
- संस्कृत वाङ्मय में योग और उसका उद्भविकास — 385-386
  रेखा मल्ल, शोधच्छात्रा, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, गंगानाथ झा परिसर, इलाहाबाद
- भूमंडलीकरण और बाजार अर्थव्यवस्था : एक अध्ययन — 387-391
  डॉ. राजभानु पटेल, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.),

उदारवादी नारीवादी चिंतन परम्परा का अध्ययन (जॉन स्टुअर्ट मिल के संदर्भ में)

संजय शर्मा *

20 मई, 1806 को लंदन में जन्में जॉन स्टुअर्ट मिल को उपयोगितावाद का अंतिम समर्थक, व्यक्तिवादी और नारीवाद की उदारवादी परम्परा के नारीवादी चिंतक के रूप में जाना जाता है। मिल ने होमर (Homer) थ्यूसीडाइडस (Thucididas), अरीस्टोफेंस (Aristophance), डिमांसथेनीज (Demonsthenes) एवं अरस्तू (Aristotle) के विचारो का अध्ययन किया। मिल की वैचारिकी पर पिता जेम्स मिल, बेंथम, ह्यूम, बर्कले, हार्टले का प्रभाव पड़ा। उसने अपने विचारों के माध्यम से उपयोगितावाद में संशोधन, कल्याणकारी राज्य का समर्थन, प्रतिनिधि शासन का औचित्य एवं स्त्री मुक्ति की बात कही। फेनॉमेनॉलाजिकल पॉजिटिविज्म के सापेक्षतः अधिक वैज्ञानिक होकर प्रागनुभववाद (अप्रॉयरिज़्म) का खंडन किया। मिल ने मानव स्वतन्त्रता, अस्मिता (व्यैक्तिकता) का समर्थन करते हुए काम्टे के स्त्रियों की सामाजिक–घरेलू दासता के जैविक–समाजशास्त्रीय आधार पर औचित्यता प्रदान करने वाले विचारो का खंडन किया। मिल ने महिलाओं को पुरुषों के समान सामाजिक–राजनीतिक अधिकार प्रदान करने की बात कही। नारीवाद की उदारवादी चिंतन परम्परा में उसे महत्वपूर्ण स्थान इसलिए प्राप्त है कि उसने समयानुकूल स्वतन्त्रता के विचार में बदलाव किया। उसने अपनी पत्नी हेरियट टेलर और पुत्री हेलन के साथ मिलकर 'स्त्रियों को पराधीनता' (1869) नामक निबंध लिखा। इस निबंध को नारीवादी चिंतन परम्परा में मील का पत्थर माना जाता है।

भारत में नारी की स्थिति क्या रहीं और क्या है? इस बात की जानकारी प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक समय की पुस्तकों से प्राप्त होती है। बदलाव की बयार भी उनके जीवन में आमूलचूल बदलाव नहीं ला पाई। प्राचीन भारतीय ग्रन्थ ऋग्वेद में स्त्री महत्व को रेखांकित करते हुए' यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता कहा गया, बाद के वर्षों में समाजव्यवस्था राजव्यवस्था और धर्मव्यवस्था ने उनके लिए सांचे तैयार किए और गढ़ा, जिसमें स्त्री की बुरी छवि सामने आई। स्त्री चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं, दैवो ने जानाति कुतो मुनष्यः, एवं स्त्री बुरी वेश्या अरू पर की ,तीजी नरक निशानी घर की, इस तरह के तमाम विचारों ने नारी जीवन को शापित बनाया। आज नारी शोषित, दमित, अपमानित है। बाप, भाई, खाप की भूमिका अत्यधिक नकारात्मक हैं इस क्षेत्र में व्यापक अनुसंधान की अपरिहार्यता और ऐसे जीवन दर्शन की आवश्यकता है जो बराबरी की जमीन मय्यसर कराये।

कुसुम त्रिपाठी (2016) में कहती है–''व्यवहार में उदारवादी नारीवाद का लक्ष्य था– पुरुषों पर महिलाओं की कानूनी, सामाजिक और आर्थिक निर्भरता को समाप्त करना। वे कहती है– 'मिल नारी के लिए प्राकृतिक अधिकारों की माँग करते है।' प्रमिला के.पी. (2015) का मानना है कि– 'पाश्चात्य जगत में रूसों, लॉक और मिल ने इसके लिए आधार प्रदान किया।' बी.एन. सिंह और जनमेजय सिंह (2013) कहते है– 'उदारवादी विचारधारा ने स्त्री समाज को उसका अधिकार दिलाने में उदारता का परिचय दिया। वे नारी को मानव जाँति का हिस्सा मानते है।' मालती सुब्रह्मण्यम (2013) कहती है– 'मेरी बोलस्टोन क्राफ्ट और हेरियट टेलर मिल, जॉन स्टुअर्ट मिल ने माना कि महिलाएं प्राकृतिक अधिकार की अधिकारिणी है।' कात्यायनी एवं सत्यम (2002) का कहना है कि मिल के चिंतन में तत्कालीन पूँजीवाद के सभी अन्तरविरोध स्पष्ट परिलक्षित होते है। वे 'बुर्जुआ उदारवादी मिल' शब्द का प्रयोग मिल के लिए करती हैं।

हिन्दी में प्रयुक्त नारीवाद का समानार्थी अंग्रेजी शब्द 'फेमिनिज्म' मूलतः फ्रेंच शब्द 'फेमिनिस्ते' से अस्तित्व में आया। पाश्चात्य देशों में 'फेमिनिस्ट' शब्द के प्रभाव में फेमिनिस्ट स्टडीज, वूमेन स्टडीज तथा विकासशील विश्व में 'स्त्री अध्ययन' शब्द स्वीकृति प्राप्त कर चुका है। नारीवाद में नारी का अभिप्राय नारी, महिला, स्त्री है एवं वाद आन्दोलन एवं सिद्धन्त को इंगित करता है। नारीवाद एक मुक्ति

---

* शोधार्थी राजनीति विज्ञान, पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ.प्र.)

आन्दोलन का पर्याय है।[1] ई. पोर्टर अपनी पुस्तक 'विमन एंड मोरल आइडेंटिटी (1991) में मानते है कि यह उत्पीड़न, असमानता अन्याय से मुक्ति खोजने का वैचारिक दर्शन है।[2] कहा जा सकता है कि यह सामाजिक राजनीतिक, आर्थिक आन्दोलन है जो परिवार, समाज, नारी शोषण, लिंग विषमता, अधीनता का विरोध करते हुए नारी सशक्तीकरण की बात करता है। अंग्रेजी भाषा के शब्द लिबररिज्म (Liberalism) की उत्पत्ति लिबरल शब्द लैटिन से हुई जो लिबेरालिस (Liberalis)[3] से अस्तित्व में आया है। यह 'स्वतन्त्रता' और 'आजादी' के संदर्भो में प्रयुक्त होता है। उदारवाद एक विचार, एक अभिवृत्ति, एक दर्शन, एक प्रवृत्ति है जिसकी अभिव्यक्ति स्वतन्त्रता, न्याय में होती है। उदारवादी नारीवाद स्वतन्त्रता के साथ–साथ समानता के विचार को नारी जीवन के लिए जरूरी मानता है।

उदार नारीवाद की चिंतन परम्परा का अध्ययन दो भागों में बाँट कर किया जा सकता है– भारतीय और पाश्चात्य। भारतीय संदर्भ में उदार नारीवाद का आगमन पुर्नजागरण काल से माना जाता है। यह मूलतः समाज सुधार और लोककल्याण से जुड़ा था। राजा राम मोहन राय, दयानन्द सरस्वती, महर्षि कर्वे, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, महात्मा गांधी और विनोवा भावे ने नारी विरोधी अंधविश्वास, नारी शिक्षा तथा सार्वजनिक एवं राजनीतिक भागीदारी बढ़ाने का प्रयास किया।[4] देश में स्वतन्त्रता के बाद संवैधानिक प्रावधानों में, न्यायिक निर्णयों में नारी समस्या के प्रति गंभीरता दिखती है। आज बहुत सारी लेखिकाएं नारी समस्या को अपने लेखन का केन्द्र बिन्दु बना रही है। आजकल स्त्री–विमर्श पर सरकारी और गैर सरकारी संस्थान संगोष्ठियां, चर्चा, परिचर्चा आयोजित करा रहें है।

पाश्चात्य उदार नारीवाद उदारवाद के दार्शनिक परम्परा से प्रभावित है। यूरोपीय पुर्नजागरणकाल (विवेक का युग) में चर्च की पारंपरिक सत्ता, कुलीन और धनी तबकों, को चुनौती देने वाले विचार अस्तित्व में आए और मानवतावादी दर्शन "सभी वस्तुओं का मापदंड मानव है" की बात होने लगी। यह उदारवाद का दर्शन था जो व्यक्तिगत आजादी के विचार पर अवस्थित था जिसका सार था– चयन की स्वतन्त्रता, समान अवसर और नागरिक अधिकार। व्यवहार में ये बातें सिर्फ अभिजातवर्गीय पुरुष, महिलाओं पर लागू होती थी। कुसुम त्रिपाठी का मानना है कि उदारवाद की बुनियाद बने आजादी, समानता, न्याय के विचार घर में कैद महिलाओं के वास्तविक जीवन के अनुभवों से बिल्कुल विपरीत थे।[5]

पुर्नजागरण काल में स्त्रियों के संदर्भ में नकारात्मक और सकारात्मक विचार सामने आते है। एक तरफ फ्रंसीसी दार्शनिक ओग्यूस्त कामते (1798–1857) ने सामाजिक संरचना की व्याख्या जैविक आधार पर करते हुए कहा–'नारी समुदाय की असमानतापूर्ण सामाजिक स्थिति का मूल कारण नारी शरीर की प्राकृतिक दुर्बलता में निहित है। वहीं कामते से पूर्व फ्रांसीसी क्रान्ति से जुड़े विचारक जाँ आँतुआँ कोन्दोर्स (1743–1794) ने स्त्रियों की उत्पीड़ित स्थिति को प्राकृतिक अधिकारों का उल्लंघन बताया। वे कहते है– 'स्त्रियों के बारे में समाज में मौजूद गहरे पूर्वाग्रह उनकी असमानतापूर्ण स्थित के मूल कारण है।'[6] दोनों विचारों को देखे तो एक स्त्री अधिकारों के विपक्ष में तो दूसरा पक्ष में जाता है। धीरे–धीरे नारी चिंतकों की तरफ से तो कुछ पुरुष चिंतकों की तरफ से यह माँग उठने लगी कि फ्रांसीसी क्रांन्ति के स्वतन्त्रता–समानता और भ्रातृत्व के विचार को बगैर लिंग– भेद के लागू किया जाना चाहिए। 'मनुष्य और नागरिक अधिकारों के घोषणा पत्र' की तर्ज पर 'ओलिम्पी दि गूँजे (1748–1793) ने 'स्त्री और स्त्री नागरिक अधिकारों का घोषणा पत्र' तैयार कर 1791 में राष्ट्रीय असेम्बली में प्रस्तुत किया। गूँजे ने 'स्त्रियों' पर पुरुषों के शासन का विरोध किया।[7] मेरी बोलस्टोनक्राफ्ट ने 1792 में अपनी पुस्तक 'A Vindication of the Rights of Women' में 'नारी अधिकारों की औचित्यता की व्याख्या की। उदारवादी नारीवादी बोलस्टोनक्राफ्ट ने गूँजे के विचारों को उन्नत रूप प्रदान किया। उन्होंने महिलाओं के लिए जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समान अधिकार और अवसर प्रदान करने की बात कही।[8] उदारवादी, चिंतक बेंथम ने अपनी पुस्तक 'इंट्रोडक्शन टू द प्रिंसीपल ऑफ मोरल्स एंड लेजिस्लेशन' में नारियों को कमजोर मानकर उनको अधिकारों से वंचित करने वाले राष्ट्रों की आलोचना की। जॉन स्टूअर्ट मिल और श्रीमती हेरियट टेलर मिल ने 1869 से अपने निबंध The

Subjection of Women में नारी अधिकारों की पुरजोर वकालत की। इसके अतरिक्त वेट्टी फ्रीडन, ग्लोरिया स्टेयिनम, रेबेका वाकर एवं सूसन वेंडल ने उदार नारीवादी चिंतन परम्परा को समृद्ध किया।

उदार नरीवादी चितंको ने व्यक्ति की गरिमा और समानता को स्थापित करने की बात कहीं। उदार नारीवाद महिलाओं को उत्पीड़न और लिंग आधारित दासता से मुक्ति दिलाना चाहता है। पितृसत्ता से मुक्ति की बात करता है। यह विचारधारा इस बात को तर्क सम्मत तरीके से रखती है कि महिलाओं और पुरुषों के व्यक्तित्व में कोई अंतर नहीं होता है। वे उमंग, उत्साह आकांक्षा, योग्यता, तार्किकता में एक जैसे है। उदार नारीवादी चिंतको ने लोकतान्त्रिक मूल्य और हिस्सेदारी के अंतर्विरोध को सामने रखा। इन्होंने निम्नलिखित ध्येयों को पूर्ण करने का प्रयास किया– महिला मताधिकार, राजनीतिक समानता, नागरिकता का अधिकार, कानूनी सुधार और समान अवसर की समानता।[9] बाद में माँगो में विस्तार देते हुए शादीशुदा महिलाओं को आर्थिक स्वायत्तता, बच्चे गोद लेने का अधिकार, सम्पत्ति और तलाक का अधिकार; श्रम और व्यवसाय के विस्तार के अधिकार की बात कही। उदार नारीवादी चयन की स्वतन्त्रता की बात करते है। वे स्त्रीत्व के गुण को विकलांगता या हेय गुण नहीं मानते। उदार नारीवादी घरेलू दायित्वों एवं निर्णय लेने में बराबरी के अधिकार की बात करते हुए परिवार में लोकतान्त्रिक मूल्यों की स्थापना तथा सरकारी संस्थानों में उच्च से उच्चतम पद योग्यानुसार प्राप्त करने की आजादी की मांग करते है। उदार नारीवादी भाषिक सुधार की माँग कर उसे लोकतान्त्रिक स्तर पर लाते हुए लिंग निरपेक्ष बनाए रखने की बात करते हैं। उदार नारीवाद सुधार कार्यों में पुरुष भागीदारी का स्वागत करता है। सामाजिक परिवर्तन में स्त्री पुरुष दोनों की समान भूमिका अपरिहार्य है, को स्वीकार करता है।

मिल अपनी पुस्तक ऑन लिबर्टी (1859) में उपयोगितावाद के आधार पर नारी स्वतन्त्रता' और मुक्ति की वकालत करते है। मिल ने पत्नी हैरियट टेलर के साथ मिलकर सब्जेक्शन ऑफ वीमेन (1869) लिखी। इसमें वह पुरुषत्व के विरुद्ध महिला–अधिकार, लिंग समानता, महिला सहभागिता, आत्मनिर्भरता एवं स्वतन्त्रता के पक्ष में तर्क प्रस्तुत करते है। वह भेदभाव के खिलाफ सम्पूर्ण समानता की बात करते है– "एक तरफ पुरुष होने के नाते विशेषाधिकार न हो तथा दूसरी तरफ स्त्री होने के नाते कोई विवशता न हो।" वह नारी के लिए महत्वपूर्ण अधिकारों की मांग करते है, जिसमें कुछ निम्न है–

(i) महिलाओं को पुरुषों की भाँति मताधिकार प्राप्त हो।
(ii)महिलाओं के साथ किसी प्रकार का भेदभाव न हो।
(iii) पुरुषों की भाँति महिलाओं को भी सार्वजनिक पद प्राप्ति का अवसर मिले।
(iv) महिला को शिक्षा संबंधी सुविधा मिले।
(v) महिलाओं के लिए रोजगार के क्षेत्र में अवसर पैदा किए जाए।
(vi) स्त्री–पुरुष दोनों को समान सम्मान प्राप्त हो।
(vii) महिला को विवाह संबधी मामले में स्वतन्त्रता मिले।
(viii) स्वतन्त्रता के मार्ग में आने वाली आर्थिक विवशता समाप्त हो।

मिल का मानना है कि आधी आबादी सार्वजनिक जीवन से वंचित है। स्त्री पुरुष के बीच भेद प्राकृतिक है लेकिन इस भेद का कोई सामाजिक आधार नही है। मिल इस भेद को ऐतिहासिक काल का अवशेष मानते है। महिलाओं की अधीनता पुरुष के बल प्रयोग का परिणाम है। महिलाओं की हीनता सामाजिक विषंगति एवं शिक्षा की कमी के कारण है।[10] मिल पुरुष प्रभुत्व को करघरे में खड़े करते है और रुढ़ियों, मान्यताओं का विरोध करते है। वे उन कानूनों का विरोध भी करते है जो इसके लिए जिम्मेदार है। मिल ने परिवार और विवाह नामक संस्था पर सवालिया निशान लगाएं और पवित्रता की बात करने वाली नैतिकता को उतार फेका। वे सेवा, समर्पण, एकनिष्ठा को एक पक्षीय मानते है जो पुरुष प्रभुत्व को स्थापित करने में मददगार साबित होते है। इस तरह मिल ने अपने नारीवादी चिंतन के माध्यम से आधी आबादी को हक दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज के दौर में महिलाओं के अधिकारों की मांग के मुद्दे बहुत हद तक मिल से प्रभावित है।

उदारवादी नारीवाद पर 'मध्यवर्गीय श्वेत औरतों की यौन–राजनीति' करने का आरोप लगाया गया था। अश्वेत नारीवादी महिलाएँ तथा उत्तर औपनिवेशिक नारीवादियों ने इस तरह की शंका जताई थी। यह भी आशंका जताई जाती है कि उदार नारीवाद में जो व्यक्तिक आजादी का मसला है, उसमें अराजक होने के कई अवसर है। सामाजिक संरचना में मूल्यों का जो सनातन स्वभाव है, वहाँ उदारवादी रूख अक्सर उच्छृंखलता को जन्म देता है।[11] मालती सुब्रह्मण्यम का मानता है कि उदारवादी नारीवाद ने महिलाओं की असमानता और अधीनता को रेखांकित किया, मगर जेंडर उत्पीडन की जड़ों और संरचनाओं का पर्याप्त तरीके से विश्लेषण नहीं किया। परिवार और उसमें महिलाओं के स्थान के सैद्धांतिकीकरण से महिलाओं के शोषण उत्पीड़न का विश्लेषण बाहर ही रखा गया।[12] उदारवाद मुख्यतः सुधार की बात करता है। उसने महिलाओं को स्वतन्त्रता तो दिलाई लेकिन परिवार में स्त्री की माँ, पत्नी, बहन, बेटी की परम्परागत भूमिका को बनाए रखा। उदारनारीवाद के अंतर्विरोध और कमजोरियों को चिन्हित कर समाजवादी और रेडिकल नारीवादियों ने अनेक मुद्दे उठाए। जिल्लाह इंस्टीन ने कहा– 'वे लैंगिक विभाजन और वर्गीय ढ़ाचे में अपसी रिश्ता नहीं तलाश सकीं।'[13]

सामंती–पूँजीवादी– वर्चस्ववादी समाज में स्त्रियों की स्थिति पशु जैसी है। वैश्वीकरण के युग में अफगानिस्तान, ईराक, अफ्रीका जैसे देशों में मानवाधिकारों का हनन, स्त्री शोषण की खबरे ह्रदयविदारक है। ऐसे में उदावादी नारीवादियों को ऐसे समाजों में व्याप्त अंधविश्वासों, जड़ता, शोषण के खिलाफ तीव्रता से आवाज उठ़ाने की जरूरत है। जिससे 'पावर टू' का विचार फलीभूत हो सके। पावरटू' का मतलव है जीवन के सभी क्षेत्रो में 'सहभागिता, आधा अवसर' मध्यमवर्गीय स्त्रियों पर उदारवादी नारीवाद का बहुत प्रभाव है। व्यापक अर्थ में भारतीय परिप्रेक्ष्य में कार्यरत किरण वेदी, अरुणा राय, मेघा पाटकर, अंरुधति राय, मयिलम्मा, दयाबाई आदि सबके कार्यों में उदारवादी नारीवाद का प्रभाव नजर आता है।[14] उदार नारीवाद महिला शिक्षा, जागरूकता, व्यक्तित्व विकास, विवेक के प्रयोग की आजादी देता है। इससे देश में महिलाओं का एक बड़ा वर्ग प्रभावित है। अब वे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक सहभागिता चाह रही है और सरकारे समावेशन कर रही है। परम्परागत समाज में स्त्री पुरुष संबंध और आज के स्त्री पुरुष संबंध में व्यापक फर्क नजर आ रहा है। धीरे–धीरे उदारवारी दर्शन के प्रभाव के परिणामस्वरूप स्वतन्त्रता, न्याय भ्रातृत्व की अवधारणाओं को अगली जामा पहनाया जा रहा है।

सन्दर्भ :

1. Mahajan, Sneh, Issue in Twentieth century world History, Macmillain Publishers Ltd., New Dethi.
2. पी. प्रमिला के 2015, स्त्री अध्ययन की बुनियाद, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृ. 13
3. वही पृ. 28
4. वही पृ. 28
5. शुक्ला आशा, त्रिपाठी कुसुम (2015), नारीवादी आन्दोलन के सिद्धान्त, (सपा.) स्त्री अध्ययन के आधार मूल मुद्दे–1, इलाहाबाद, साहित्य भंडार, पृ. 76–77.
6. मिल, जॉन स्टुअर्ट। (2002) अनुवाद प्रगति सक्सेना, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृ. 11–14
7. वहीं पृ. 12
8. Encyclopedia of Feminism 1986,
9. आर्य साधना एवं अन्य 2001, नारीवादी राजनीति, संघर्ष एवं मुद्दे नई' दिल्ली, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, पृ. 22
10. अरोरा, एन डी, (2001) राजनीति विज्ञान नई दिल्ली, टी.एच. पृ. 11.75
11. वही पी. प्रमिला के पृ. 33
12. वही आर्य साधना एवं अन्य, पृ. 26
13. वही पृ. 27.
14. वहीं पी. प्रमिला के पृ. 33.